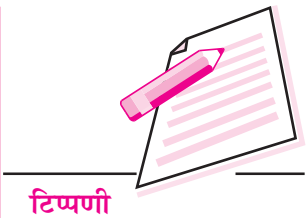

14

बाल अध्ययन के तरीके

एक शिशु में होने वाले परिवर्तन पूर्णरूप से वयस्कों पर निर्भर होते हैं। शिशु को जटिल योग्यताओं के साथ स्वतंत्र रूप में विकसित करने हेतु बहुत अधिक ध्यान दिए जाने की आवश्यकता होती है। बच्चे कैसे सीखते हैं इस संबंध में बहुत से विद्धानों ने बेबी बायोग्राफी के रूप में बहुत से लेख लिखे हैं। चार्ल्स डार्विन ने जैविक विविधता के अध्ययन के दौरान 'ऑन द आरिजन ऑफ स्पीशज' लिखी तथा यह भी लिखा कि उसके बेटे ने किस तरह भाषा का अर्जन किया। कई वर्षों बाद पियाजे ने अपने बच्चे का अवलोकन करते हुए विस्तृत जानकारी को अभिलेखित करके बच्चों में भाषा एवं विचारों के विकास पर गहन समझ प्रस्तुत की। बाद में बाल्यावस्था में नैतिकता के विकास को समझने के लिए उन्होंने खेल के दौरान बहुत से बच्चों से बातचीत की।

बाल्यावस्था की अद्धितीय विशेषताओं को कवियों एवं लेखकों ने भी अपनी रचनाओं का हिस्सा बनाया है। बाल्यावस्था पर काव्य संस्करणों में बच्चों के जीवन का व्यवस्थित अभिलेख मिलता है।

भारत के संदर्भ में, तुलसीदास एवं सूरदास ने राम एवं कृष्ण के बचपन का काव्य रूप में विकास के साथ वर्णन किया है।

पियाजे ने बेबी बायोग्राफी के विचार में सुधार किया तथा बाल्यावस्था की क्रियाओं को अभिलेखित करने का व्यवस्थित एवं ज्यादा वैज्ञानिक तरीका प्रस्तुत किया। बच्चों के सामाजीकरण से संबंधित पूर्व अध्ययन, वयस्कों का इस बात पर ध्यान केन्द्रित करते थे कि बच्चे कैसे प्रतिक्रिया करते हैं तथा कैसे सीखते हैं। हाल के वर्षों में, बच्चों द्वारा अपने भौतिक सामाजिक परिवेश को सक्रिय रूप से समझने की उनकी क्षमता को समझने पर बल दिया जा रहा है। किसी एक संदर्भ में बच्चों के कौशलों एवं अनुभवों को ध्यान में रखते हुए ऐसे तरीकों को विकसित किया गया जो अधिक बालकेन्द्रित हों तथा बच्चों की अभिव्यक्ति को बढ़ावा दें। बच्चों के व्यवहार एवं विचार को अधिक व्यवस्थित ढंग से समझने हेतु बाल अध्ययन की विशिष्ट तकनीकों को जानना महत्वपूर्ण है। इस पाठ में आप बाल विकास के अनुसंधान की कुछ विधियों एवं तरीकों का अध्ययन करेंगे।

अधिगम प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- बाल अध्ययन के विविध तरीकों की व्याख्या करते हैं;
- बच्चे कला द्वारा स्वयं को किस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं, का वर्णन करते हैं; और
- बच्चों की प्रगति के प्रतिवेदन के तरीकों की व्याख्या करते हैं।

14.1 मानव विकास का अध्ययन एवं अनुसंधान

बाल अध्ययन एवं अनुसंधान हमें उनके व्यवहारों, प्रतिक्रिया की प्रकृति तथा उनके सीखने के तरीकों एवं वे प्रश्न क्यों पूछते हैं, इत्यादि को समझने में सहायक होते हैं। हमारा यह विश्वास हो सकता है कि बच्चे एक विशिष्ट तरीके से व्यवहार करते हैं परन्तु विभिन्न परिस्थितियों में उनके साथ हमारी बातचीत में हमें यह जानकर आश्चर्य होता है कि उनकी सोच उससे बहुत अलग होती है जैसा हमने सोचा था। बच्चों का कौशल अर्जन उनके विशिष्ट सामाजिक समूह से भिन्न हो सकता है। माता-पिता की अपेक्षाएं भी समूह से समूह में भिन्न हो सकती है। अक्सर माता-पिता यह महसूस करते हैं कि बच्चे ठीक से नहीं पढ़ रहे हैं या शिक्षक यह अवलोकन कर सकते हैं कि माता-पिता पर्याप्त रुचि नहीं ले रहे हैं। ऐसे अवलोकन तब तक केवल एक अटकल ही हो सकते हैं जब तक कि उसके प्रमाण हेतु व्यवस्थित परीक्षण कर उपयुक्त साक्ष्य प्रस्तुत न किये जायें। किसी भी प्रकार का निष्कर्ष केवल नमूना जनसंख्या से संबंधी आँकड़ों को एकत्र करके ही निकाला जा सकता है। किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए एकत्र तथ्यों को वर्गीकृत एवं विश्लेषित किया जाना चाहिए। जाँच की यह प्रक्रिया तथा तथ्यों एवं आँकड़ों के निकाय से निष्कर्ष निकालना अनुसंधान प्रक्रिया का एक हिस्सा है। ये आँकड़े एकत्र करने की विविध तकनीकों के साथ कई प्रकार के हो सकते हैं जिन्हें मानव व्यवहार का अध्ययन करने की तकनीक कहा जाता है।

आइए, हम विभिन्न प्रकार के शोध अभिकल्पों का अध्ययन करें जो बच्चों पर अनुसंधान का मार्गदर्शन करते हैं।

14.1.1 शोध अभिकल्प के प्रकार

शोध अभिकल्प व्यवस्थित रूप से शोध या अनुसंधान पूरा करने के लिए एक विस्तृत प्रक्रिया या रूपरेखा है। अध्ययन की जाने वाली समस्या की प्रकृति शोध अभिकल्प के चयन हेतु मार्गदर्शन करती है। समस्या की प्रकृति के आधार पर सामाजिक समूहों के वर्गों से प्रतिभागियों (नमूना) का चयन किया जाता है। बच्चों के संदर्भ में यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अध्ययन की तकनीकों एवं तरीकों का बहुत सोच समझकर चयन किया गया हो। ये तरीके आयु उपयुक्त हों तथा मुद्रित सामग्री पर ज्यादा निर्भर न हों।

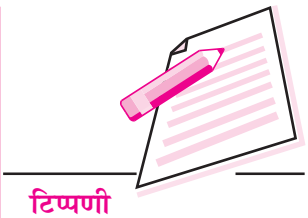

टिप्पणी

क्रॉस सेक्शनल रिसर्च : यह समूह से एक विशेष समय पर अलग-अलग आयु के लोगों से आँकड़े एकत्र करने का तरीका है। यह समूह सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि आदि जैसे गुणों में मेल खाने वाला होना चाहिए। यह शीघ्र पूर्ण होने वाला शोध है क्योंकि इसमें एक ही समय में आँकड़े एकत्र हो जाते हैं।

अनुदैर्ध्य अनुसंधान (Longitudinal Research) : यह एक निश्चित अवधि में समय के विभिन्न अंतरालों पर लोगों के एक समूह से सूचना एकत्र करने वाले अनुसंधान मुद्दों का एक अध्ययन है। चयन की गई समस्या के अध्ययन हेतु, समय के साथ नमूने का अनुसरण किया जाता है तथा अलग-अलग समय पर प्रतिभागियों के एक से समूह से आँकड़ों को एकत्र किया जाता है। यद्यपि इसके द्वारा समृद्ध एवं उपयोगी जानकारी शामिल होती है तथापि ऐसे अनुसंधान मंहगे होते हैं तथा इन्हें करते रहना मुश्किल होता है।

व्यैक्तिक अध्ययन (Case Study) : यह किसी व्यक्ति, समूह या संस्थान का एक गहन अध्ययन है। इस प्रकार का अध्ययन कई तकनीकों का उपयोग करके किया जाता है। व्यैक्तिक अध्ययन उपागम में, मानवीकृत तथा अन्य दोनों ही प्रकार की तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है।

प्रयोगात्मक अभिकल्प (Experimental Design) : यह एक ऐसा अनुसंधान अभिकल्प है जिसमें दो या दो से अधिक समूहों की समान परिस्थितियों में तुलना की जाती है जहाँ प्रत्येक समूह को अलग-अलग उपचार दिया जाता है। उदाहरण के लिए, ऐसे प्रायोगिक अभिकल्प जिसमें दो समूह शामिल हैं, के लिए, जिस समूह को उपचार दिया जाता है उसे नियंत्रित समूह तथा दूसरे समूह जिसे उपचार नहीं दिया जाता है उसे प्रायोगिक समूह कहा जाता है।

14.2 अध्ययन के उपकरण और तकनीक

बच्चों की आयु तथा साक्षरता स्तर के आधार पर आँकड़े एकत्र करने के तरीकों या तकनीकों की पहचान करना महत्वपूर्ण है क्योंकि बच्चे के साथ जुड़ने के कई अलग-अलग तरीके होते हैं। यद्यपि, यह तरीके मानव के साधारण एवं दैनिक अनुभवों जैसे दूसरे लोगों को देखना तथा बातचीत करना इत्यादि पर आधारित होते हैं तब भी वैज्ञानिक अध्ययन में यह अंतर होता है कि ये व्यवस्थित, विश्वसनीय, मानकीकृत तथा वैध तरीके होते हैं। विभिन्न विधियों के अन्तर्गत प्रतिभागियों से आँकड़े एकत्र करने के लिए विभिन्न उपकरणों का उपयोग किया जाता है।

14.2.1 उपकरण का चयन

एक बार मूल अभिकल्प तय होने के पश्चात, अगला कदम इसके लिए आँकड़ों के संग्रहण हेतु विधि की पहचान करना है। इन विधियों का चयन आयु, शैक्षिक अनुभव तथा समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखकर किया जाता है। उदाहरण के लिए, शिशु अध्ययन अवलोकन पर अधिक निर्भर करेगा तथा बड़े स्तर पर शैक्षिक तरीकों का अध्ययन प्रश्नावली द्वारा किया जा सकता है। निरक्षर आबादी की अभिरुचि एवं विकल्पों का अध्ययन साक्षात्कार द्वारा किया जा

टिप्पणी

सकता है। साथ ही, साक्षात्कार विधि के माध्यम से बातचीत की बारीकियों को आसानी से अभिलेखित किया जा सकता है। एक अच्छे उपकरण की निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं–

- **विश्वसनीयता:** इसका तात्पर्य यह है कि बार-बार प्रयुक्त करने पर भी यह उपकरण लगातार समान एवं स्थिर परिणाम देते हैं। उदाहरण के लिए, उपकरण से प्राप्त परिणाम उपकरण के प्रशासन के समय तथा अनुसंधानकर्त्ता बदलने पर भी समान रहते हैं।
- **वैधता:** इसका तात्पर्य यह है कि उपकरण उस विषय का मापन करें जिसके लिए उसका निर्माण किया गया है, इसके अलावा कुछ नहीं। उदाहरण के लिए, एक बुद्धि परीक्षण बुद्धि मापन के लिए ही उपयुक्त होगा ना कि अन्य किसी गुण के मापन के लिए।
- **मानकीकरण:** यह एक बड़े समूह पर उपकरण को प्रशासित करके उसकी वैधता तथा विश्वसनीयता सुनिश्चित करने की एक प्रक्रिया है। इसका अर्थ परीक्षण संपूर्ण समूह पर सुसंगत तरीके से प्रशासित किया जाना तथा अंकन किया जाना है।

पाठगत प्रश्न 14.1

(क) बताइए कि निम्नलिखित कथन सत्य है या असत्य–

1. नियमित अंतराल पर चयन किये गये बच्चों के एक समूह का अवलोकन करना अनुदैर्ध्य अध्ययन कहलाता है।
2. बच्चे किसी शोध अध्ययन का हिस्सा नहीं हो सकते हैं क्योंकि उन्हें अभी बड़े होना है।
3. विश्वसनीयता तब होती है जब बार-बार उपयोग करने पर प्रश्नों को अलग अर्थ में समझा जाता है।
4. वैधता वह है जब उपकरण वही मापता है जिसका उसे मापन करना चाहिए।
5. मानकीकृत परीक्षण उनके मूल्य तथा मान की सुनिश्चितता के लिए बड़े समूह पर बनाये जाते हैं।

(ख) विभिन्न प्रकार के शोध अभिकल्पों को सूचीबद्ध कीजिए।

14.2.2 अवलोकन

अवलोकन बाल्यावस्था के दौरान होने वाले परिवर्तनों तथा व्यवहार मे होने वाले परिवर्तनों एवं पैटर्नों को समझने की एक विधि है। यह छोटे बच्चों के अध्ययन हेतु एक उपयोगी तकनीक है तथा अन्य तकनीकों में भी बहुत सहायक है। यह अवलोकित किये जाने वाले व्यक्ति की गतिविधियों का व्यवस्थित निरीक्षण है। अवलोकन करने का अर्थ किसी वस्तु या किसी व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह या किसी घटना के सभी पक्षों का निरीक्षण परीक्षण करना है। अवलोकन

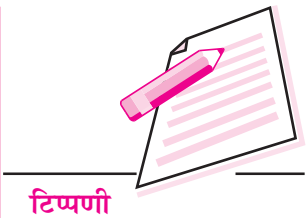

टिप्पणी

किसी विशिष्ट उद्देश्य का वर्णन करते हुए व्यवहार का प्रत्यक्ष रूप से निरीक्षण करना है कि यह बच्चों में होने वाले परिवर्तनों के बारे में माता-पिता से चर्चा करने तथा इस चर्चा को प्रतिवेदित करने में सहायता करता है। अवलोकनों में बेहतर परिणामों की प्राप्ति हेतु योजना बनाना बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। अवलोकन एवं अभिलेख की विधियों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

काल प्रतिदर्श चयन (Time Sampling): काल प्रतिदर्शचयन कम तथा समान समय अंतराल में बच्चों के व्यवहार का अवलोकन तथा अभिलेखन है। उदाहरण के लिए हर 15 मिनट बाद अध्ययन के अन्तर्गत निर्धारित व्यवहार का अवलोकन करना तथा उसे लिखना है।

घटना प्रतिदर्श चयन (Event Sampling): यह बच्चे के किसी विशिष्ट व्यवहार जैसे भाषा या क्रोध करने को अवलोकित करने तथा लिखने के लिए उपयोग किया जा सकता है।

चैक लिस्ट (Check List) : यह मापदंडों की एक सूची है जिस पर अवलोकन की अवधि के दौरान शिक्षक (माता-पिता या अन्य वयस्क) अवलोकित किये गये व्यवहारों या लक्षणों की जाँच करता है। एक अवलोकनकर्ता किसी गतिविधि या घटना का अवलोकन कर सकता है और फिर 'महत्वपूर्ण व्यवहार हुआ या नहीं' इस आधार पर चैकलिस्ट को पूरा कर सकता है।

नमूना विवरण (Specimen Description) : नमूना विवरण का उपयोग करते समय अवलोकनकर्ता बच्चों के व्यवहार या अच्छी घटनाओं से संबंधित के विवरण भी नोट करता है जो व्यवहार से पहले या तुरंत बाद में होते हैं। अवलोकनकर्ता उसकी उपस्थिति के दौरान होने वाली सभी घटनाओं को लिखित रूप से दर्ज करता है। अवलोकनों के अभिलेखन हेतु श्रव्य दृश्य साधनों का भी उपयोग किया जा सकता है।

अवलोकन दो प्रकार के होते हैं जोकि निम्नलिखित हैं–

14.2.2.1 सहभागी और गैर-सहभागी अवलोकन

सहभागी अवलोकन तब होता है जब कोई अवलोकनकर्ता बच्चों के साथ उस घटना में शामिल होता है जिसका अवलोकन किया जाना है। गैर सहभागी अवलोकन तब होता है जब अवलोकनकर्ता अवलोकन किये जाने वाले बच्चों के साथ अन्तर्क्रिया किए बगैर अवलोकन करता है।

14.2.2.2 संरचित और असंरचित अवलोकन

संरचित अवलोकन वह तकनीक है जिसमें अवलोकनकर्ता पूर्व में तैयार की गई योजना के आधार पर अवलोकन करता है। घटनाएँ अवलोकन मार्गदर्शिका के आधार पर रिकार्ड की जाती हैं। अवलोकनकर्ता, अवलोकन की जा रही गतिविधि में शामिल नहीं होता है परन्तु जहाँ तक संभव हो बिना बताए रिकॉर्ड करता है।

टिप्पणी

असंरचित अवलोकन वह तकनीक है जिसमें अवलोकनकर्ता बिना किसी पूर्व योजना या मार्गदर्शिका के सभी पक्षों का अवलोकन करता है। अवलोकन के दौरान जो भी घटित हो रहा होता है सभी अवलोकित किया जाता है।

14.2.2.3 अवलोकन विधि के लाभ

1. यह व्यक्ति या समूह के व्यवहार के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी उपलब्ध कराता है।
2. यह वास्तविक परिस्थितियों में सूचना एकत्र करने में सहायता करता है न कि बनावटी परिस्थितियों में।
3. ऐसी परिस्थितियों में भी सूचनाएँ एकत्र करना संभव होता है जहाँ प्रयोग करना संभव नहीं होता।
4. यह समग्र परिदृश्य प्रस्तुत करने में सहायक है।

14.2.2.4 अवलोकन विधि की हानियाँ

1. यह खर्चीली विधि है तथा इसमें समय अधिक लगता है।
2. अवलोकन का सीमित दायरा सूचना को बेकार कर सकता है।
3. अवलोकनकर्ता परिस्थिति पर सीमित नियंत्रण कर सकता है।
4. अवलोकित व्यवहार सामान्य न होकर जटिल हो सकते हैं।
5. यदि बच्चों को पता लग जाए कि उन्हें अवलोकित किया जा रहा है तो परिणाम बदल सकते हैं।
6. अवलोकनकर्ता सभी व्यवहारों को नोट करने में सक्षम नहीं हो सकता।

अवलोकन के दौरान ध्यान रखने वाले कारक

1. जिसका अवलोकन किया गया है उसके बारे में सभी सूचना जैसे अवलोकन की अवधि, दिनाँक तथा स्थान इत्यादि सभी को लिखा जाना चाहिए।
2. जहाँ तक सभव हो बच्चों के व्यवहार तथा संदर्भ के बारे में अधिक से अधिक सूचनाएँ नोट करें।
3. जैसे ही व्यवहार हो तुरंत नोट करें।
4. व्याख्या नहीं लिखें।
5. अवलोकन किये जा रहे बच्चों का सम्मान करें।
6. अवलोकन किये जा रहे बच्चों की गतिविधियों में हस्तक्षेप न करें।

टिप्पणी

14.3 साक्षात्कार

यह ऐसी तकनीक है जिसमें आकड़ों के संग्रहण हेतु बच्चों से प्रत्यक्ष रूप से बातचीत हो जाती है। एक व्यक्ति (साक्षात्कारकर्ता), दूसरे व्यक्ति (जिसका साक्षात्कार होना है) से कुछ निश्चित मुद्दों पर कुछ प्रश्न पूछता है तथा इस बातचीत के आधार पर निष्कर्ष निकालता है। यह एक गहन तथा विस्तृत बातचीत होती है जोकि कुछ निश्चित उद्देश्यों पर आधारित होती है। साक्षात्कार अनुसूची साक्षात्कार में उपयोग की जाने वाली प्रश्नों की एक सूची होती है। साक्षात्कार के दौरान आमने-सामने का संपर्क, दोहराव, पुनः तैयार करने तथा कभी-कभी संवेगात्मक मुद्दों पर बातचीत करने में बहुत ही सहायक होता है। साक्षात्कार को श्रव्य-दृश्य रूप से रिकार्ड या नोट किया जा सकता है। श्रव्य रिकार्डिंग ज्यादा सटीक होती है तथा उन्हें प्रलेखित करने की आवश्यकता होती हैं। प्रलेखन रिकॉर्डिंग को आगे-पीछे सुनने तथा प्रतिक्रियाओं को लिखने की प्रक्रिया है हर उच्चारण जैसे ऊँह, आह, गलत शुरूआत और हकलाना, दोहराव, विचलित करने वाले वाक्य (जैसे ''आप जानते हैं,'' ''जैसे कि'') तथा साक्षात्करकर्ता की टिप्पणी जैसे ''सही'' या ''हाँ'' इत्यादि को रिकॉर्ड करना जरूरी होता है। इसमें विराग, हँसी, रोना, रूकावट, व्यक्तिगत टिप्पणियाँ, बाहरी शोर इत्यादि या संक्षेप में सब कुछ जो हम सुनते हैं, शामिल होना चाहिए।

साक्षात्कार को संरचित तथा संचालित करने हेतु निम्नलिखित चरण हैं–

1. अध्ययन किये जाने वाले मुद्दे का निर्णय लें तथा कोई उपयुक्त शीर्षक दें।
2. इस मुद्दे से संबंधित सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों को सूचीबद्ध करें जिनकी जांच करनी है।
3. साधारण रूप से एवं सावधानी से प्रश्नों को लिखें।
4. लिखे गये प्रश्नों को सरल से जटिल की ओर व्यवस्थित करें।
5. प्रतिक्रिया देने वाले के लिए अपने उद्देश्य की व्याख्या हेतु परिचयात्मक अवतरण तैयार करें।
6. शब्दों की वैद्यता सुनिश्चित करने के लिए साक्षात्कार से पहले क्षेत्र परीक्षण करें। क्षेत्र परीक्षण के दौरान बातचीत उपागम का उपयोग करें।
7. आपकी उपस्थिति में प्रतिक्रिया देने वाले को सहज महसूस करने के लिए कुछ समय लें। इसे तालमेल गठन भी कहा जाता है।
8. सौहर्दपूर्ण वातावरण में साक्षात्कार संचालित किया जाना चाहिए।
9. प्रतिक्रिया देने वाले का धन्यवाद करें तथा नम्रतापूर्वक साक्षात्कार को समाप्त करें।
10. सभी उत्तरों को सटीकता से लिखें। यह सुझाव दिया जाता है कि जैसे ही साक्षात्कार समाप्त हो साक्षात्कार में दिये गये उत्तरों का विस्तृत विवरण लिखा जाना चाहिए।

विभिन्न प्रकार के साक्षात्कार निम्नलिखित हैं–

टिप्पणी

14.3.1 साक्षात्कार के प्रकार

14.3.1.1 संरचित: संरचित साक्षात्कार में सावधानीपूर्वक चयन किये गये किसी विषय से संबंधित पूर्व निर्धारित प्रश्नों को अनुसंधानकर्ता द्वारा बच्चों से पूछा जाता है जिनके उत्तर की पूर्व परिभाषित होते हैं।

14.3.1.2 अर्द्ध-संरचित: अर्द्ध-संरचित साक्षात्कार निष्पक्ष खुले ढ़ाँचे में संचालित किये जाते हैं जो केन्द्रित होते हैं तथा दो तरफा संचार एवं संवाद की अनुमति देते हैं। ये सूचना लेने तथा सूचना देने, दोनों ही प्रकार से उपयोग किये जा सकते हैं। इसमें लचीले प्रश्नों का एक समूह होता है जिन्हें मार्गदर्शक के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

14.3.1.3 असंरचित: यह एक अनौपचारिक चर्चा होती है जिसमें कोई सख्त दिशा-निर्देश नहीं होते हैं तथा जो मुक्त चर्चा के अवसर प्रदान करता है एवं काफी विस्तृत प्रकृति का होता है।

14.3.2 साक्षात्कार के लाभ

1. मुद्दों के गहन अध्ययन हेतु साक्षात्कार एक सशक्त तकनीक है।
2. यदि प्रश्नों को ठीक से नहीं समझा गया है तो प्रश्नों को दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है या दोहराया जा सकता है।
3. साक्षात्कार देने वाले या लेनेवाले दोनों ही अपनी गति के हिसाब से आगे बढ़ सकते हैं।
4. संदेहों का स्पष्टीकरण किया जा सकता है तथा आवश्यकता हो तो चर्चा को आगे बढ़ाया जा सकता है।
5. यह अनपढ़ लोगों के साथ भी आसानी से उपयोग किया जा सकता है।

14.3.3 साक्षात्कार की हानियाँ

1. साक्षात्कार संचालन हेतु विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।
2. कई बार आमने-सामने की बातचीत से बच्चे घबरा जाते हैं, विशेषतया: जब प्रश्न बहुत ही व्यक्तिगत होते हैं।
3. कभी-कभी लिखना तथा रिकार्ड करना बच्चे को ज्यादा सचेत कर देता है।

साक्षात्कार के दौरान ध्यान रखने वाले कारक

1. प्रश्नों को सावधानीपूर्वक संरचित किया जाए।
2. साक्षात्कार बहुत अधिक लम्बा नहीं होना चाहिए।
3. तालमेल गठन पर ध्यान देना चाहिए तथा बच्चे को सहज महसूस होना चाहिए।
4. साक्षात्कार के दौरान दिये गये उत्तरों को गोपनीयता बनी रहनी चाहिए।

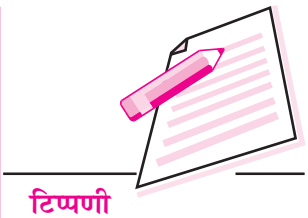

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 14.2

(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. बच्चों को कुछ समय के लिए संक्षिप्त अंतरालों पर देखने को ..... कहा जाता है।
2. संरचित साक्षात्कार में किसी थीम पर स्वतंत्र ..... होती है।
3. शिशुओं के खेल व्यवहार का ..... में सर्वोत्तम अध्ययन किया जाता है।
4. साक्षात्कार देने वाले का सम्मान ..... सुनिश्चित करके किया जा सकता है।
5. भावनाओं, संवेगों तथा मूल्यों को समझने के लिए ..... अच्छी विधि है।

(ख) नीचे दिये गये पदों को संबंधित कॉलम में लिखिए–

सहभागी तथा गैर सहभागी, वास्तविक परिस्थिति, अन्तर्क्रिया, अर्द्धसंरचित, आमने-सामने, घटना प्रतिदर्श चयन

अवलोकन	*साक्षात्कार*

14.4 प्रश्नावली

प्रश्नावली एक ऐसा उपकरण है जिसमें प्रश्नों को प्रतिक्रियाएँ एकत्रित करने की रणनीति के रूप में उपयोग करते हैं। इसमें लिखित प्रश्नों का एक समूह होता है जिस पर व्यक्ति (व्यक्तियों) या विषय (विषयों) पर प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है। यह किसी चयनित विषय पर भावनाओं, विश्वासों, अनुभवों, धारणाओं या दृष्टिकोण के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रश्नों का एक संक्षिप्त एवं पूर्व नियोजित समूह होता है। प्रश्नावली व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से प्रशासित की जा सकती है।

14.4.1 प्रश्नावली के प्रकार

प्रश्नावली के दो प्रकार की होती है- बंद प्रश्नावली तथा खुली प्रश्नावली। आइए, इनके बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।

टिप्पणी

14.4.1.1 बंद प्रश्नावली: इस प्रश्नावली में पूर्व निर्धारित प्रश्नों की सूची होती है साथ ही उत्तरों के लिए विकल्प होते हैं। यहाँ उत्तरदाता को दिये गये बहु विकल्पों में से किसी एक विकल्प का चयन करना होता है।

14.4.1.2 खुली प्रश्नावली: इस प्रश्नावली में पूर्व निर्धारित प्रश्नों की सूची होती है। परन्तु विवरणात्मक तथा व्यक्तिपरक उत्तर देने हेतु अवसर होता है।

14.4.2 प्रश्नावली के लाभ

1. प्रश्नावली प्रशासित करना कम खर्चीला होता है तथा इसमें समय भी कम लगता है।
2. कम समय में अधिक व्यक्तियों से सूचना एकत्र की जा सकती है।
3. प्रत्येक व्यक्ति को निश्चित प्रश्नों के निश्चित क्रम वाली प्रश्नावली दी जाती है अत: साक्षात्कार से प्राप्त सूचना को तुलना में प्रश्नावली से सूचनाएँ आसानी से एकत्र की जा सकती है।

14.4.3 प्रश्नावली की हानियाँ

1. यह केवल साक्षर उत्तरदाताओं के लिए ही उपयोग में ली जा सकती है।
2. इसमें प्रश्नों तथा उत्तरों की व्याख्या एवं स्पष्टीकरण हेतु कोई अवसर नहीं होता है।
3. अनुवर्त्ती प्रश्नों की कोई गुंजाइश नहीं होती है।
4. इसकी वापसी की दर कम होती है अर्थात् उत्तरदाता भरी हुई प्रश्नावली को वापस नहीं करता है।
5. ऐसी भी संभावना होती है कि उत्तरदाता सभी प्रश्नों के उत्तर न दें।

प्रश्नावली तैयार करते समय ध्यान में रखे जाने वाले कारक :

1. प्रश्नावली की शब्दावली, प्रश्नों की क्रमबद्धता तथा निर्देश सावधानीपूर्वक तैयार किये जाने चाहिए।
2. गोपनीयता सुनिश्चित की जानी चाहिए।
3. खुली प्रश्नावली में लिखने के लिए पर्याप्त स्थान दिया जाना चाहिए।
4. प्रश्नावली उत्तरदाताओं को उनकी क्षेत्रीय भाषा में दी जानी चाहिए।

टिप्पणी

प्रश्नावली व साक्षात्कार में अंतर

साक्षात्कार	*प्रश्नावली*
1. आमने-सामने की प्रक्रिया होती हैं।	प्रकाशित सामग्री द्वारा प्रशासित होती है।
2. शिशु व छोटे बच्चों के अलावा सभी के लिए उपयुक्त है।	केवल साक्षर लोगों के लिए उपयुक्त है।
3. समय ज्यादा लगता है।	कम समय में होता है।
4. किसी विशेष समय में कुछ ही व्यक्तियों के साथ संचालित किया जा सकता है।	किसी विशेष समय में बहुत बड़ी संख्या में प्रशास्ति किया जा सकता है।
5. उत्तरों का विश्लेषण जटिल होता है।	पूर्व निर्धारित उत्तरों तथा श्रेणियों की वजह से विश्लेषण करना सापेक्षतया आसान होता है।
6. आमने-सामने की परिस्थिति में साक्षात्कारदाता को प्रश्नों का अर्थ स्पष्ट करना आसान होता है।	संदेहों को दूर न कर पाने की स्थिति में उत्तरदाता प्रश्नों को अपनी व्याख्या के अनुसार समझता है।
7. उत्तरदाता के बारे में गहन समझ का पता लगाना संभव है।	बंद प्रश्नावली के स्थिति में केवल सीमित क्षेत्रों की समझ का पता लगाना ही संभव हों।
8. सामाजिक रूप से वांछित उत्तर ही प्राप्त होते हैं।	उत्तर देते समय गोपनीयता उत्तरदाता को ज्यादा ईमानदार होने की अनुमति देती है।
9. साक्षात्कार अनुसूची तैयार करना सापेक्षतया आसान है।	बंद प्रश्नावली तैयार करने में ज्यादा समय लगता है तथा इसकी प्रक्रिया जटिल होती है।

पाठगत प्रश्न 14.3

बताइए कि निम्नलिखित कथन सत्य है या असत्य–

1. साक्षात्कार में, प्रतिभागियों के संदेहों एवं प्रश्नों को स्पष्ट किया जा सकता है।
2. प्रश्नावली साक्षर लोगों से सूचनाएँ एकत्र करने हेतु उपयोग की जाती है।
3. प्रश्नावली कम समय लेने वाली होती है।
4. संरचित साक्षात्कार में प्रश्नों का क्रम मायने नहीं रखता है।

14.5 संचार के रूप में कला

अभिव्यक्ति के कलात्मक रूपों जैसे कि रोल प्ले और ड्राइंग का उपयोग बच्चों के साथ उनकी प्रतिक्रियाओं को जानने के लिए किया जा सकता है। ये बच्चों के व्यवहारों तथा विचारों से संबंधित आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतु उपयोग की जा सकती हैं।

आइए, इन कलात्मक रूपों के बारे में और अधिक जानें–

14.5.1 रोल प्ले (Roleplay)

रोल प्ले एक ऐसी विधि है जिसमें अलग-अलग व्यक्ति स्वयं या अन्य किसी व्यक्ति के बारे में किसी स्थिति या परिदृश्य के बारे में दिये गये उद्देश्यों के आधार पर भूमिका का निर्वहन करते हैं। यह जटिल सामाजिक स्थितियों में शामिल मुद्दों की खोज करने की एक विधि है। जो व्यक्ति रोल प्ले में शामिल होते हैं उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे विशेष स्थिति या भूमिका के अनुसार कार्य करें। उदाहरण के लिए, रोल प्ले में, बच्चे ऐसी स्थितियों की भूमिका निर्वहन कर सकते हैं जो काल्पनिक या वास्तविक परिस्थितियों पर आधारित हों। शोधकर्ता बच्चों को विभिन्न पात्रों की भूमिका निभाते हुए या नाटक के बाद की चर्चा में पात्रों से चर्चा करके सूचनाएँ एकत्र कर सकता है।

14.5.1.1 रोल प्ले के लाभ

- यह बच्चों द्वारा भूमिका निर्वहन के दौरान विचारों एवं परिप्रेक्ष्यों से संबंधित सूचनाएँ एकत्र करने में सहायता करता है।
- यह बच्चों में संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं से संबंधित सूचनाओं को एकत्र करने में उपयोगी है।
- यह बच्चों की कौशल पहल, संवाद, आत्म-जागरूकता तथा सहयोग की समस्याओं एवं समाधानों के प्रति बच्चों की प्रतिक्रियाओं का आकलन करने में सहायता करता है।
- यह मानव के जटिल अन्तर्क्रियाओं को पहचानने में सहायता करता है।

14.5.2 संवाद के स्रोत के रूप में चित्र

छोटी उम्र से ही बच्चे के क्रेयान से टेड़ी-मेढ़ी रेखाएँ खींचना पसंद करते हैं। वे कागज पर विशेष रंग या स्ट्रॉक का उपयोग कर सकते हैं। चित्र का कोई दोष आकार या वास्तविक से कोई मेल नहीं होता है। जब माँ या शिक्षक ने बच्चों से इस बारे में पूछा कि इन्होंने क्या बनाया है तो उनके दिये उत्तर में एक अर्थ होता है। हाल के वर्षों में, शोधकर्ताओं ने 4 से 6 वर्ष के बच्चों को उनके द्वारा बनाये गये चित्रों के बारे में जानने का प्रयास किया है। चित्रों का रंग, स्ट्रोक की त्रीवता तथा उनके आख्यान के आधार पर विश्लेषण किया जाता है।

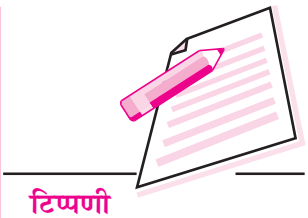

टिप्पणी

14.6 बच्चों की प्रगति का प्रतिवेदन

14.6.1 उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड (Anecdotal Records)

उपाख्यानात्मक अभिलेख महत्वपूर्ण प्रकरणों का विस्तृत विवरण है जो कि किसी समय की अवधि के लिए दैनिक आधार पर बच्चों की प्रगति अभिलेखित करने के लिए लिखा एवं अनुरक्षित किया जाता है। उपाख्यानात्मक अभिलेख बच्चों के जीवन के बारे में बहुत ही महत्वपूर्ण आवधिक जानकारी प्रदान करते हैं। रिकॉर्ड में बच्चों के विकास से संबंधित कई पहलू जैसे उनके व्यवहार, बातचीत, पसंद, नापसंद, रूचि इत्यादि शामिल हो सकते हैं।

14.6.2 संविभाग (Portfolio)

पोर्टफोलियो बच्चों के काम का एक संग्रह हैं जो उनके विकास एवं प्रगति को दर्शाता है। इसमें बच्चों के लेखन, चित्रकला एवं शिल्प कार्य, गतिविधि पत्रक, तस्वीरें, वीडियो आदि शामिल होते हैं। यह बच्चों की वृद्धि विकास तथा अधिगम का प्रकाश है जो बच्चों के जीवन की एक समृद्ध एवं व्यापक तस्वीर प्रस्तुत करता है। बच्चों के पोर्टफोलियो में ड्राइंग, लेखन और कोई भी अन्य गतिविधि के शामिल किया जा सकता है। यह विभिन्न आयामों में बच्चों के वृद्धि एवं विकास के आकलन हेतु एक व्यापक माध्यम प्रदान करता है। यह संग्रह बच्चों को उनके कार्य पर चर्चा करने, याद करने, और विशेष घटना या कार्यक्रम को याद रखने के साथ-साथ इसे दूसरों के साथ साझा करने के अवसर भी देता है।

आपने क्या सीखा

- बच्चों के क्रमबद्ध अध्ययन, उनके व्यवहार तथा विचारों के अध्ययन हेतु विशिष्ट तकनीकों जैसे अवलोकन, साक्षात्कार, प्रश्नावली, कला तथा रोल प्ले इत्यादि का उपयोग किया जाता है।
- अनुसंधान अभिकल्प अनुसंधान को व्यवस्थित रूप से पूरा करने हेतु एक रूपरेखा या विस्तृत प्रणाली है। इसमें क्रास सेक्सनल रिसर्च, अनुदैर्ध्य अनुसंधान, व्यैक्तिक अध्ययन तथा प्रायोगिक अभिकल्प शामिल हैं।
- सफलतापूर्वक जानकारी एकत्र करने हेतु एक अच्छे उपकरण की अवश्यकता होती है।
- उपाख्यानात्मक अभिलेख महत्वपूर्ण प्रकरणों का विस्तृत विवरण है जो कि किसी समयावधि के लिए दैनिक आधार पर बच्चों की प्रगति अभिलेखन हेतु लिखा तथा अनुरक्षित किया जाता है। ये बच्चों के जीवन के बारे में महत्वपूर्ण आवधिक जानकारी देते हैं।

- पोर्टफोलियो बच्चों के काम का एक संग्रह है जो उनके विकास एवं प्रगति को दर्शाता है। इसमें बच्चों के लेखन, चित्र, कला एवं शिल्प कार्य, गतिविधि पत्रक, तस्वीरें, वीडियो आदि शामिल होते हैं। यह बच्चों की वृद्धि, विकास तथा अधिगम का प्रमाण है जो बच्चों के जीवन को एक समृद्ध एवं व्यापक तस्वीर प्रस्तुत करता है?

पाठांत प्रश्न

1. कुछ ऐसे मुद्दे एवं सरोकारों पर चर्चा कीजिए जिनकी बच्चों के व्यैक्तिक अध्ययन द्वारा खोजबीन की जा सकती हो।
2. बच्चों से संबंधित आँकडे एकत्रीकरण में विविध कलात्मक रूपों को किस प्रकार उपयोग में लाया जा सकता है?
3. पहले 6 महीनों में शिशु के व्यवहार को समझने हेतु अवलोकन विधि की उपयोगिता का वर्णन कीजिए।
4. प्रश्नावली एवं साक्षात्कार विधि में अन्तर का वर्णन कीजिए।
5. निम्नलिखित के संचालन हेतु ध्यान रखने वाले बिन्दुओं को सूचीबद्ध कीजिए–
   - साक्षात्कार
   - अवलोकन
   - प्रश्नावली

उत्तरमाला

14.1

(क) 1. सत्य 2. असत्य 3. असत्य 4. सत्य 5. सत्य

(ख) क्रास सेक्सनल, अनुदैर्ध्य, प्रायोगिक एवं व्यैक्तिक अध्ययन

14.2

(क) 1. काल प्रतिदर्श चयन 2. बातचीत 3. अवलोकन 4. गोपनीयता 5. साक्षात्कार

(ख)

अवलोकन	साक्षात्कार
सहभागी एवं गैरसहभागी	अर्द्ध-संरचित
वास्तविक परिस्थिति	आमने-सामने
घटना प्रतिदर्श चयन	अन्तर्क्रिया

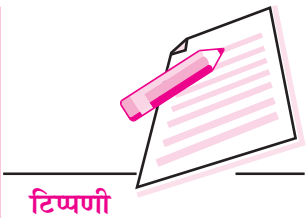

टिप्पणी

14.3

(क) 1. सत्य 2. सत्य 3. सत्य 4. असत्य

शब्दावली

बायोग्राफी : जीवन की कहानी

विकास के संदर्भ : व्यक्तिगत सामाजिक प्रभाव एवं परिस्थितियाँ।

विकास के आयाम : विकास एवं अधिगम के विभिन्न क्षेत्र

विकास के सिद्धांत : वृद्धि एवं विकास के सार्वभौमिक गुण

विकास की अवस्थाएँ : वृद्धि के आयु अनुरूप काल

अध्ययन की तकनीक : व्यवहार अध्ययन हेतु विविध उपकरण

संदर्भ

- Berk, L.E. (2009). *Development Through the Lifespan*. New Delhi: Pearson.
- Corsaro, W. A. (1997).*The Sociology of Childhood*. California: Sage, Pine Forge Press.
- Kakar, S. (1980).*The Inner World*. New Delhi: Oxford University Press.
- National Council of Educational Research and Training. (2006). *Position Paper of the National Focus Group on Early Childhood Education.* New Delhi: NCERT.
- Santrock, J. W. (1994). *Child development (6th Ed.).* Wisconsin: Brown & Benchmark Publishers.

इंटरनेट स्रोत

http://psychology.about.com/od/developmentalpsychology/a/devresearch.htm

http://lrrpublic.cli.det.nsw.edu.au/lrrSecure/Sites/LRRView/7401/documents/theories_outline.pdf